आचरण करे, तो उसके लिए कृष्णभावनारूप जीवन की परम सिद्धि निश्चित है।

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि।।५८।।

मच्चित्तः=मेरे स्मरण में लीन; **सर्वदुर्गाणि**=सब बाधाओं को; **मत् प्रसादात्**=मेरी कृपा से; **तरिष्यसि**=तर जायगा; **अथ**=और; **चेत्**=यदि; **त्वम्**=तू; **अहंकारात्**=मिथ्या अहंकारवश; **न**=नहीं; **श्रोष्यसि**=सुनेगा (तो); **विनंक्ष्यसि**=नष्ट हो जायगा।

अनुवाद

मेरे स्मरण से भावित होकर तू मेरी कृपा से सब बाधाओं को तर जायगा और यदि अहंकारवश मेरी वाणी को नहीं सुनेगा, अर्थात् इस भावना से कर्म नहीं करेगा, तो नष्ट हो जायगा।।५८।।

तात्पर्य

पूर्ण कृष्णभावनाभावित पुरुष अपने जीवन के कर्तव्यों की पूर्ति के लिए अनावश्यक आतुरता नहीं दिखाता। जो मूर्ख हैं, वे इस सब उद्वेगों से रहित अवस्था का मूल्य नहीं समझ सकते। जो कृष्णभावनाभावित कर्म करता है, भगवान् उसके परम अंतरंग सखा बन जाते हैं। अपने सखा के सुख की उन्हें सदा चिन्ता लगी रहती है। यही नहीं, जो नित्य-निरन्तर दिन में चौबीस घण्टे भगवत्-प्रीति के लिए कर्म के परायण रहता है, उस भक्तरूप सखा के लिए तो वे आत्मदान तक कर बैठते हैं। अतः कोई भी देह को आत्मस्वरूप समझने से उत्पन्न मिथ्या अहंकार के वशीभूत न हो। अपने को मिथ्या रूप में प्रकृति के नियमों से स्वतन्त्र, अर्थात् स्वेच्छाचार करने में समर्थ नहीं समझना चाहिए। बद्धजीव वास्तव में पूर्णरूप से प्रकृति के नियमों के आधीन है; परन्तु कृष्णभावनाभावित कर्म के परायण होते ही वह मुक्त हो जाता है, सांसारिक उपद्रवों से छूट जाता है। यह भलीभाँति जान लेना चाहिए कि जो कृष्णभावना में क्रियाशील नहीं है, वह जन्म-मृत्युरूप सागर के भँवर में अपने को खो रहा है। कोई बद्धजीव नहीं जानता कि वस्तुतः क्या करना है और क्या नहीं करना है। एकमात्र कृष्णभावनाभावित पुरुष ही कर्म करने को स्वतन्त्र है, क्योंकि वह जो कुछ करता है, वह सब अन्तर्यामी श्रीकृष्ण द्वारा प्रेरित है और गुरुदेव द्वारा प्रमाणित है।

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।।५९।।

यत्=जो; **अहंकारम्**=मिथ्या अहंकार को; **आश्रित्य**=आश्रय करके; **न योत्स्ये**=मैं युद्ध नहीं करूँगा; **इति**=ऐसा; **मन्यसे**=मानता है; **मिथ्या**=मिथ्या है; **एषः**=यह; **व्यवसायः ते**=तेरा निश्चय; **प्रकृतिः**=प्रकृति; **त्वाम्**=तुझे; **नियोक्ष्यति**=युद्ध में बलपूर्वक लगा देगी।